सिद्ध क्षेत्र

श्री माँगीतुंगी गिरि जी

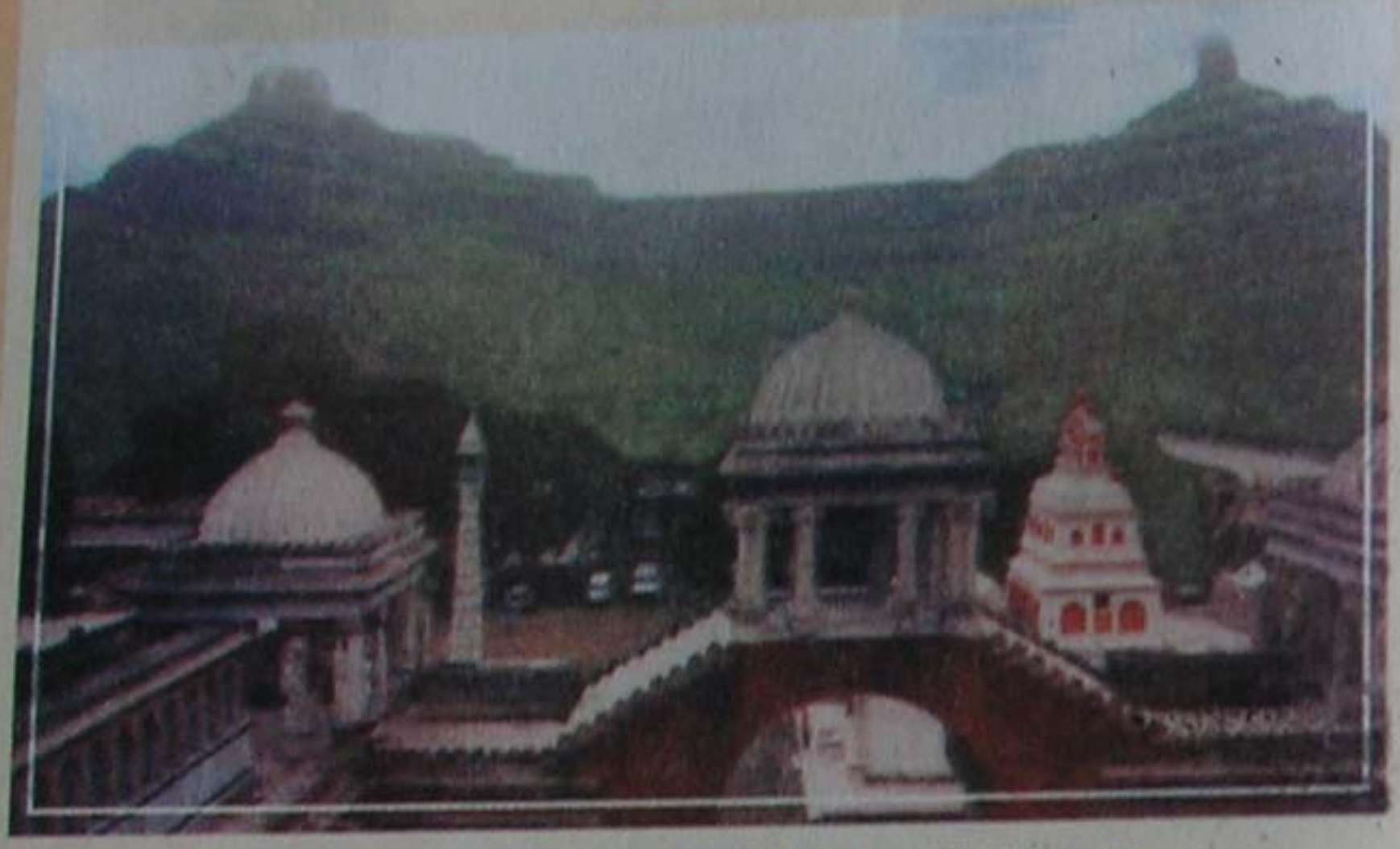

Shri Maangi Tungi Siddha Kshetra, Maharastra

अर्घ

जल फलादि वसु दरब साजके, हेम पात्र भरलाऊँ।
मन वच काय नमूं तुम चरना, बार बार सिर नाऊँ॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिर थिरथाई।
कोड़ी निन्यानवे मुक्ति गये मुनि, पूजो मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्ध क्षेत्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।